वेदों की ओर लौटो !

।। ओ३म् ।।

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

श्रेष्ठ मानव बनो !

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने
हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक
महर्षि दयानन्द

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

पू. स्वामी श्रद्धानन्दजी
(हरिश्चन्द्र गुरुजी)

वर्ष १८ अंक ११ १० नवम्बर २०१८

राष्ट्रपति श्री रामनाथजी कोविन्द के करकमलों से
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की झलकियाँ

महासम्मेलन के उद्घाटक राष्ट्रपति श्री रामनाथजी कोविंद को महर्षि दयानन्द की चित्रकृति प्रदान करते हुए सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपालजी एवं अन्य गणमान्य।

सम्मेलन में मार्गदर्शन करते हुए हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रतजी।

योगगुरु बाबा रामदेवजी का आर्यजनों को प्रेरणादायी सम्बोधन।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११९ कलि संवत् ५११९ विक्रम संवत् २०७५

दयानन्दाब्द १९४ कार्तिक १० नवम्बर २०१८

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
राजेन्द्र दिवे	डॉ.ब्रह्ममुनि	डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९८२२३६५२७२)		(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४१७७७) प्रा.ओमप्रकाश होलीकर(९८८१२१५६१६), प्रा.सत्यकाम पाठक(९९७०५६२३५६), ज्ञानकुमार आर्य(९६२३८४२२४०)

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगन्ध ४

२) सम्पादकीयम् ५

३) महासम्मेलन : राष्ट्रपतिजी का उद्घाटन भाषण..... ७

४) वेदप्रचार की अनोखी परम्परा १२

५) वैदिक व्याख्यानमाला-विज्ञापन १५

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १७

२) मंत्रदाता ऋषी - ÷महर्षी दयानंद' १८

३) शोकवार्ता २८

४) दोन वक्तृत्व स्पर्धा-परिपत्रक..... ३०

✻ प्रकाशक ✻

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज, परली-वैजनाथ ४३१५१५

✻ मुद्रक ✻

वैदिक प्रिन्टर्स

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क

वार्षिक रु.१००/-

आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगंध

पूर्ण विद्यावालों का सद्व्यवहार

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।।
आ वोऽर्वाची सुमतिववृत्यादँहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासत्।।

(यजु.३३/६८)

पदार्थान्वय–हे **(आदित्यासः)** सूर्यवत्तेजस्वी पूर्णविद्यावाले लोगो× जैसे **(देवानाम्)** विद्वानों का **(यज्ञः)** संगति के योग्य संग्रामादि व्यवहार **(सुम्नम्)** सुख करने को **(प्रत्येति)** उलटा प्राप्त होता है वैसे **(मृडयन्तः)** सुखी करनेवाले **(भवत)** होवो। जैसे **(वः)** तुम्हारी **(वरिवोवित्तरा)** अत्यन्त सेवा को प्राप्त **(अर्वाची)** हमारे अनुकूल **(सुमतिः)** उत्तम बुद्धि **(आ, ववृत्यात्)** अच्छे प्रकार वर्त्ते **(अंहोः)** अपराधी की **(चित्)** भी वैसे सुख करनेवाली हमारे अनुकुल बुद्धि **(असत्)** होवें।

भावार्थ – इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जिस देश में पूर्ण विद्यावाले राजकर्मचारी हों वहां सबकी एकमति होकर अत्यन्त सुख बढे ।

सभा के आगामी कार्यक्रम

१. स्कूल व कॉलेजों के छात्र-छात्राओं में वैदिक विचारधारा का प्रसार व उन्हें मानवीय मूल्यों का पथप्रदर्शन कराने के लिए ÷वैदिक व्याख्यानमाला '। (दि.३ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर २०१८)

२.स्व.विट्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा (रविवार, दि.९ दिसम्बर २०१८-प्रातः ११ बजे)
स्थान-सरजूदेवी भिक्कूलाल भारुका आर्य कन्या विद्यालय, हिंगोली

३. सौ.व श्री चिल्ले गौरव महाविद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा (शनिवार, दि.२२ दिसम्बर २०१८-प्रातः ११ बजे)
स्थान - मास्टर दिनानाथ मंगेशकर महाविद्यालय, औराद शहाजानी जि.लातूर

संपादकीयम् आर्यत्व का शंखनाद...×

नई ऊर्जा, अपूर्व उत्साह व नवचेतना के साथ विश्वस्तर वैदिक सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार व प्रसार करने के पवित्र दृढसंकल्प को लेकर गतिमान होने का शंखनाद करते हुए दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सफलता की ऊंचाइयों को छू गया और आर्य जगत् के इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ बन गया। देश के सर्वोच्च पद पर आसीन भारतवर्ष के प्रथम नागरिक महामहीम राष्ट्रपति महोदय से लेकर देश-विदेश के कोने-कोने से पधारे ऋषिभक्त आर्यजनों ने आर्यसमाज की विराट शक्ति का जो भव्यतम व अनुपमेय रूप देखा, परखा व अनुभूत किया, वह निश्चित ही अपूर्व, अप्रतिम एवं अवर्णनीय रहा।

समाज में अविद्या, अज्ञान व अंधविश्वासों के बहते प्रवाह में पतित भोली-भाली जनता इस समय पहले से अधिक परेशान है। सामान्य लोग सम्प्रदाय व जातिवाद की चक्की में पिस रहे हैं। धर्म व अध्यात्म के नाम पर नये-नये मतों का उदय हो रहा है, तो दूसरी ओर पाश्चात्य सभ्यता, जडवाद, अनैतिकता के बादल सर्वत्र मंडरा रहे हैं। ऐसे में १४३ वर्ष पुराना यह महान् आर्य संगठन नई अंगडाई लेता हुआ देखकर कौन ऋषिभक्त आर्य फूले न समायेगा? आपसी फूट, सिद्धान्तहीनता, स्वार्थप्रियता आदि के कारण आर्य समाज का अस्तित्व इस समय नगन्य सा माना जाने लगा था, तब ऐसे में सभी प्रकार की कमजोरियों को चकनाचूर करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्य संगठन शक्ति का जो एकात्मिक परिचय हुआ, वह निश्चय ही आशा की नयी किरण बनेगा। बदलते परिवेश में आर्यों के सामने संगठन को लेकर जो चिन्ता का विषय खडा था, उसके लिए यह सम्मेलन एक मजबूत, समर्थ व सुगठित आर्य शक्ति के रूप में उभरकर आगे आने के आसार नजर आ रहे है।

महासम्मेलन के संयोजकों ने सम्पूर्ण कार्यक्रमों को टी.वी.चैनलों व यू ट्युब की आधुनिक तंत्रप्रणाली के साथ जोडकर समारोह को जन-जन तक पहुंचाया है। इस चार दिवसीय सम्मेलन का नियोजन बहुत सुव्यवस्थित रहा। पहले दिन प्रातः महासम्मेलन का उद्घाटन भारतवर्ष के महामहीम राष्ट्रपति श्री रामनाथजी कोविन्द के करकमलों से हुआ। राष्ट्रपति महोदय की उपस्थिति तथा उनके द्वारा दिये गये मौलिक व सारगर्भित भाषण से आर्यों के इस महाकुम्भ की गरिमा ऐतिहासिक सिद्ध हुई। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने महर्षि दयानन्द

व आर्य समाज का गौरवपूर्ण शब्दों में उल्लेख किया। उनकी इस विचारप्रस्तुति से देश की करोडों जनता तक दयानन्द और आर्य समाज का पहुंचना यह अत्यन्त सुखद व सुपरिणामी सिद्ध होता है। राष्ट्रपतिजी ने महर्षि दयानन्द को १९वी शताब्दी के महान निर्भीक योद्धा के रूप में प्रस्तुत किया। स्वामीजी के शैक्षिक, सामाजिक, आध्यात्मिक विचार व कार्य केवल भारत के लिए ही नहीं, बल्कि आज समूचे विश्व के लिए कितने प्रासंगिक हैं, इस पर उन्होंने बल दिया।

आर्य समाज के वर्तमान में चल रहे मानव कल्याणकारी उपक्रमों व कार्यों की जहां उन्होंने मुक्तकंठ से प्रशंसा कर सन्तोष जताया, वहीं स्वच्छता अभियान, सौरउर्जा व वैकल्पिक ऊर्जा के अन्य स्त्रोतों को अपनाकर पर्यावरण रक्षा में योगदान देने की अपेक्षा आर्य समाज से व्यक्त की। ध्यान देने योग्य बात है कि राष्ट्रपतिजी ने अपने भाषण में जहां आर्य समाज के अतीतकालीन स्वर्णिम इतिहास का स्मरण दिलाया, वहीं उन्होंने म.दयानन्द के आर्य समाज स्थापना प्रसंग की ओर भी आर्यों को इंगित किया। स्वामीजी ने आर्य समाज की स्थापना की, लेकिन वे इस संस्था के साधारण सदस्य ही बनें। लोगों के आग्रह पर भी उन्होनें अध्यक्ष(प्रधान) पद ग्रहण नहीं किया। राष्ट्रपति जी के इस प्रतिपादन पर आर्यों को चिन्तन करना चाहिए क्योंकि आर्य समाज को आज पदलोलुपता व स्वार्थी मनोवृत्ति घेर लिया है। इसी कारण सम्प्रति आर्य समाज का कार्य व संगठन अवरुद्ध हो चुका है।

राष्ट्रपति जी के साथ ही इस महासम्मेलन में ३ राज्यपाल, २ मुख्यमंत्री, ५-६ केंद्रीय मन्त्री, सांसद, विधायक, विभिन्न पार्टीयों के नेता, योगगुरु स्वामी रामदेवजी, आचार्य बालकृष्णजी आदियों की उपस्थिति व उनके प्रेरणात्मक सम्बोधन ने सम्मेलन में नया उत्साह भर दिया। देश-विदेश से आये हुए लगभग १० लाख से अधिक आर्यजनों की समुचित व्यवस्था, विभिन्न स्थानों पर आयोजित संगोष्ठियाँ, वेदपारायण यज्ञ, ८ हजार याज्ञिकों का सामूहिक यज्ञ, आर्यवीर दल का भव्य प्रदर्शन, विद्वानों के व्याख्यान, भजनोपदशकों की भजन प्रस्तुति, नाटिकाओं व गीतों की अभिव्यक्ति आदि सभी कार्यक्रम बहुत ही उत्कृष्ट ढंग से सम्पन्न हुए। सार्वदेशिक सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों व आर्य कार्यकर्त्ताओं का समर्पण, त्याग व सुयोग्य नियोजन इस सम्मेलन को ऐतिहासिक बनाने में महत्त्वपूर्ण रहा। इन सभी का हार्दिक अभिनन्दन व शुभकामनाएं...×

- नयनकुमार आचार्य

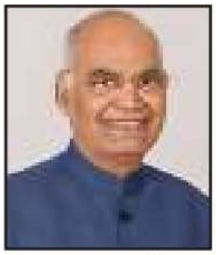

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २०१८
महामहीम राष्ट्रपति श्री रामनाथजी कोविन्द का
उद्घाटन भाषण

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में मंचपर उपस्थित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी, सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष, संयोजक, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी एवं उपस्थित संन्यासीवृंद, आर्य विद्वानों एवं देश-विदेश से भारी संख्या में पधारे आर्य नर-नारी...×

यहाँ उपस्थित आप सभी लोगों में आर्य समाज के आदर्शों और महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति श्रद्धा और उत्साह का भाव देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मुझे यह जानकर खुशी हई है कि इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन में भाग लेने के लिए ३२ देशों से प्रतिनिधि पधारे हैं। आप लोगों की ऊर्जा और आर्य समाज की सक्रियता को देखकर मुझे श्री अरविंद घोष का एक कथन याद आता है। उन्होंने स्वामी दयानन्द जी के बारे में कहा था कि **÷वे मनुष्यों और संस्थाओं के मूर्तिकार हैं।'** उनकी क्षमता को देखते हुए ईश्वरचन्द्र विद्यासागर और केशवचन्द्र सेन सरीखे समाज सुधारकों ने भी यह चाहा कि स्वामीजी को जनता के साथ संवाद करना चाहिए और उनका उद्धार करना चाहिए। आगे चलकर स्वामी दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से आत्मानन्द सरस्वती, लाला हंसराज, पंडित गुरुदत्त, स्वामी श्रद्धानंद और लाला लाजपतराय जैसे परोपकारी महापुरुषों ने आर्य समाज के प्रकल्पों को आगे बढाया। सचमुच ही स्वामी दयानंद जी के आदर्शों की प्रेरणा से करोडों मनुष्यों के चरित्र का निर्माण हुआ है। मैं आप सबके साथ उनके सम्मान में नमन करता हूँ।

■ **आर्य समाज ने देश में अनेक विद्यालयों और महाविद्यालयों की स्थापना की है। मुझे भी आर्य समाज द्वारा कानपुर में स्थापित एक संस्थान में उच्च-शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। आर्य समाज से प्रेरित होकर मेरे पूर्वज भी आर्य समाज के आन्दोलन में सहभागी रहे हैं।**

यहाँ इस समारोह के आरम्भ में गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा उच्चारित जो मंत्र हमने सुनें, उनका संदेश हमारी बुद्धि और चेतना को सब प्रकार से शुद्ध करने का है। ये मंत्र धर्म और संप्रदाय से ऊपर उठकर, पूरी मानवता को प्रकाशित करने के लिए आवाहन हैं।

जैसा कि सभी जानते हैं उन्नीसवीं

सदी में एक ऐसा दौर आया था, जब पश्चिमी साम्राज्यवाद अपनी बुलंदी पर था और भारत के लोग अपनी संस्कृति और मान्यताओं को कमजोर समझ रहे थे। अंध-विश्वासों और कुरीतियों ने समाज को जकड रखा था। ऐसे समय में स्वामी दयानंद सरस्वती ने पुनर्जागरण और आत्म-गौरव का संचार किया। वे सामाजिक और आध्यात्मिक सुधार के निर्भीक योद्धा थे। उन्होंने शिक्षा, समाजसुधार विशेषकर अस्पृश्यता-निवारण और महिला सशक्तीकरण के ऐसे प्रभावी कदम उठाए, जो आज तक भारतीय समाज के लिए और पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक हैं। उन्होनें हमारी आस्थाओं को शक्ति प्रदान करने के साथ-साथ आचार-विचार से जुडी पध्दतियों को तर्क की कसौटी पर परखने का उपदेश दिया और समाज को कुरीतियों और आडंबरों से मुक्त कराया। आस्था और आधुनिकता का यह समन्वय स्वामीजी की अनमोल देन है।

स्वामी दयानंद की सबसे लोकप्रिय और महत्त्वपूर्ण पुस्तक ÷सत्यार्थ प्रकाश' का पहला संस्करण सन् १८७५ में प्रकाशित हुआ था। इसी वर्ष मुंबई में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि ÷सत्यार्थ प्रकाश' में स्वामी दयानन्द ने नमक कानून का विरोध किया था। वे इस कानून को गरीबों के लिए अहितकर मानते थे। हम सभी जातने हैं कि इस पुस्तक के प्रकाशित होने के ५५ वर्षों के बाद १९३० में डांडी में गांधी जी ने नमक कानून तोडकर हमारे स्वाधीनता आंदोलन में एक नई ऊर्जा का संचार किया था।

■ आधुनिक परिवेश में स्वामी दयानन्द के दिखाए मार्ग पर चलना और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। स्वामीजी समाज को मत-पंथ-संप्रदाय और जाति-पाति से मुक्त करते हुए मानव मात्र को ÷आर्य' अर्थात् ÷श्रेष्ठ' बनाने के लिए आजीवन सक्रिय रहे और सबको प्रेरित करते रहे। इस कार्य को उसकी पूर्णता तक आगे लले जाना हम सभी का कर्तव्य है। स्वामीजी शांति-पाठ का महत्त्व समझाते है। सभी जानते हैं, उस शांति-पाठ में निहित यह कामना पर्यावरण संतुलन का आदर्श रूप है। आज ÷क्लाइमेट चेंज' और ÷ग्लोबल वार्मिंग' की चुनौतियों के सम्मुख इसी आदर्श को प्राप्त करने के लिए आर्य समाज जैसी संस्थाओं को निरंतर प्रयास करना है।

स्वामी दयानंद ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर आर्य समाज के आदर्शों का प्रसार किया। उन्हें अनेक अवसरों पर कडे विरोध का सामना भी करना पडा था। अनेक स्थानों पर उनके विरुद्ध बल प्रयोग तक करने के लिए असामाजिक तत्त्वों को इकट्ठा किया जाता था। कई स्थानों पर

कानूनी दांवपेंच भी लगाए गए। एक बार बनारस में रुढिवादियों ने मैजिस्ट्रेट के पास जाकर उन्हें राजी कर लिया कि शांति भंग होने की आशंका के आधार पर स्वामी दयानन्द के भाषणों पर रोक लगा दी जाए। स्वामी दयानंद को भाषण देने से रोकने के सरकारी आदेश की ÷पायनियर और थियोसॉफिस्ट' अखबारों ने कडी आलोचना की और वह सरकारी आदेश रद्द किया गया। स्वामीजी के भाषण सफलतापूर्वक आयोजित किए गए और वे बहुत लोकप्रिय हुए।

■ **महर्षि दयानन्द सामाजिक और आध्यात्मिक सुधार के निर्भीक योद्धा थे। उन्होंने शिक्षा, समाजसुधार विशेषकर अस्पृश्यता-निवारण और महिला सशक्तीकरण के ऐसे प्रभावी कदम उठाए, जो आज तक भारतीय समाज के लिए और पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक हैं।**

इस प्रकार अनेक स्थानों पर स्वामीजी को विरोध सामना करना पडा, लेकिन उनकी तर्क-शक्ति और समाज के हर व्यक्ति के कल्याण की उनकी दृष्टि का लोगों पर गहरा असर पडा और आर्य समाज की लोकप्रियता और शक्ति बढती गई। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि उन्नीसवीं सदी में ही स्वामी जी ने यह समझाया कि स्त्रियों के अधिकार पुरुषों के ही समान होने चाहिए।

उनकी कार्य-शैली का अंदाज इस बात से भी लगाया जा सकता है कि आर्य समाज की स्थापना करने के बाद उन्होंने एक साधारण सदस्य के रूप में निरंतर कार्य किया और अध्यक्ष पद स्वीकार करने के आग्रहों को नहीं माना। मुझे लगता है, उन्होंने जो यह परम्परा डाली थी, वह कितनी सर्वमान्य और कितनी मर्यादित थी× आज तो हम कहीं न कहीं भटकते जा रहे हैं, संस्थाएं होती है, उनमें हम पदाधिकारी कैसे है? यह मुझे लगता है कि शायद हम सब लोगों को उनका यह जो मन्तव्य व मार्गदर्शन है, उनपर विचार करना चाहिए। महर्षि दयानन्द की प्रामाणिकता, सत्य-निष्ठा और आधुनिक सोच के बल पर आर्य समाज के आंदोलन ने जोर पकडा और उत्तर भारत में तेजी से एक के बाद एक सैकडों आर्य समाज केन्द्रों की स्थापना हो गई।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का चिंतन और उनका सक्रिय योगदान भारत की परंपरा के प्रति गौरव की भावना पर आधारित है। उन्होंने भारतीय चिंतन की शक्ति को पहचाना और उसे व्यवहार जगत् में प्रसारित किया। उनकी इसी विशेषता को व्यक्त करते हुए गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था - ÷मैं सादर प्रणाम करता हूँ उस महागुरु दयानन्द को, जिसकी दिव्यदृष्टि ने भारत की आत्मगाथा

में, सत्य-गाथा में, सत्य और एकता का बीज देखा।'

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आर्य समाज के आदर्शों और क्रियाकलाल्पों को आधुनिक युग में प्रासंगिक बनाए रखने के निरंतर प्रयास चलते रहते हैं। मुझे बताया गया कि इस सम्मेलन में अंध-विश्वास निवारण, आधुनिकीकरण, भविष्य की चुनौतियों और जरुरतों, नारी सशक्तिकरण, आदिवासियों के कल्याण तथा प्राकृतिक आपदाओं के प्रबंधन जैसे विषयों पर विचार-विमर्श किया जाएगा। मुझे आशा है कि सौर ऊर्जा तथा वैकल्पिक ऊर्जा के अन्य स्रोतों के प्रयोग के लिए आर्य समाज भी प्रयास करेगा और इस तरह पर्यावरण संरक्षण को अपना योगदान देगा। समाज में आधुनिक विचारों को शक्ति प्रदान करना, महिलाओं को समुचित स्थान व शक्ति प्रदान करना, प्रगति का लाभ सभी वर्गों तक पहुंचाना, घरों-गाँवों-शहरों की स्वच्छता सुनिश्चित करना, पर्यावरण और विकास की चुनौतियों का सामना करना ऐसे महत्त्वपूर्ण मुद्दें हैं, जिन पर सरकार के साथ-साथ समाज को भी सक्रिय भूमिका निभानी है। आर्य समाज जैसे संगठन ऐसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर अपना योगदान दे रहे हैं,यह प्रसन्नता की बात है।

यह शरद-कालीन उत्सवों का समय है। इस समय दिल्ली जैसे शहरों के वातावरण में प्रदूषण की वजह से सांस लेने की दिक्कतें बढ जाती हैं। बच्चों और बुजुर्गों पर इसका अधिक असर पडता है। सामाजिक संस्थाओं को लोगों में यह जागरुकता फैलानी चाहिए कि सभी त्यौहार इस प्रकार मनाएँ जाएँ जिससे पर्यावरण पर कोई प्रतिकूल प्रभाव न पडे तथा शांति और सौहार्द बना रहे। आर्य समाज जैसे संस्थान इन कार्यों में अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं ।

■ आर्य समाज की स्थापना करने के बाद स्वामीजीने एक साधारण सदस्य के रूप में निरंतर कार्य किया और अध्यक्ष पद स्वीकार करने के आग्रहों को नहीं माना। मुझे लगता है, उन्होंने जो यह परम्परा डाली थी, वह कितनी सर्वमान्य और कितनी मर्यादित थी× आज तो हम कहीं न कहीं भटकते जा रहे हैं, संस्थाएं होती है, उनमें हम पदाधिकारी कैसे है? यह मुझे लगता है कि शायद हम सब लोगों को उनका यह जो मन्तव्य व मार्गदर्शन है, उनपर विचार करना चाहिए।

आज आर्य समाज की लगभग दस हजार इकाइयां देश-विदेश में मानव कल्याण के कार्यों में संलग्न हैं। नैतिकता पर आधारित आधुनिक शिक्षा तथा समाज के प्रत्येक वर्ग के, विशेषकर महिलाओं और वंचित वर्गों के उत्थान के लिए आर्य समाज ने प्रभावशाली योगदान दिए हैं। आर्य समाज ने देश में अनेक विद्यालयों

और महाविद्यालयों की स्थापना की है। मुझे भी आर्य समाज द्वारा कानपुर में स्थापित एक संस्थान में उच्च-शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। आर्य समाज से प्रेरित होकर मेरे पूर्वज भी आर्य समाज के आन्दोलन में सहभागी रहे हैं। आर्य समाज ने नारी सशक्तीकरण के हित में देश के विभिन्न हिस्सों में कन्या-पाठशालाओं और उच्च-शिक्षण संस्थानों की भी स्थापना की है। इसी प्रकार आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार के लिए ÷अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ' द्वारा स्कूल तथा कौशल विकास केंद्र चलाए जा रहे हैं, जहां बच्चों को नि:शुल्क आवासीय शिक्षा प्रदान की जाती है। इस सेवाश्रम संघ द्वारा अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के उत्थान के लिए, उन्हें शिक्षा के माध्यम से समाज की मुख्य धारा से जोडा जा रहा है।

■ **÷सत्यार्थ प्रकाश' में स्वामी दयानन्द ने नमक कानून का विरोध किया था। वे इस कानून को गरीबों के लिए अहितकर मानते थे। हम सभी जातने हैं कि इस पुस्तक के प्रकाशित होने के ५५ वर्षों के बाद १९३० में डांडी में गांधी जी ने नमक कानून तोडकर हमारे स्वाधीनता आंदोलन में एक नई ऊर्जा का संचार किया था।**

सन २०२४ में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दौ सौ वीं जन्म-जयंती है। सन् २०२५ में आर्य समाज की स्थापना की एक सौ पचासवीं वर्षगांठ होगी। आधुनिक परिवेश में स्वामी दयानंद के दिखाए मार्ग पर चलना और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। स्वामीजी समाज को मत-पंथ-संप्रदाय और जाति-पाति से मुक्त करते हुए मानव मात्र को ÷आर्य' अर्थात् ÷श्रेष्ठ' बनाने के लिए आजीवन सक्रिय रहे और सबको प्रेरित करते रहे। इस कार्य को उसकी पूर्णता तक आगे लले जाना हम सभी का कर्तव्य है। स्वामीजी शांति-पाठ का महत्त्व समझाते है। सभी जानते हैं, उस शांति-पाठ में निहित यह कामना पर्यावरण संतुलन का आदर्श रूप है। आज ÷क्लाइमेट चेंज' और ÷ग्लोबल वार्मिंग' की चुनौतियों के सम्मुख इसी आदर्श को प्राप्त करने के लिए आर्य समाज जैसी संस्थाओं को निरंतर प्रयास करना है।

इस प्रकार पर्यावरण के प्रति सजग और मानव-कल्याण के प्रति संवेदनशीलता तथा असमानता और अंध-विश्वास से मुक्त समाज की ओर बढते हुए, आर्य समाज के सभी सदस्य, स्वामी दयानन्द सरस्वती के आदर्शों के प्रति अपनी आस्था को साकार रूप प्रदान करेंगें। इस विश्वास के साथ, मैं ÷अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन' के सभी प्रतिभागियों के तथा पूरे समाज के उज्ज्वल भविष्य की मंगल-कामना करता हूँ। धन्यवाद×

* * *

वेदप्रचार की अनोखी परम्परा

- राजेन्द्र दिवे (मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्र.सभा)

वेद का पावन सन्देश हर गांव व नगर के जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा गत कई वर्षों से पूरी तरह सक्रिय है। विशेषकर प्रतिवर्ष श्रावण माह में सभान्तर्गत छोटी-बडी लगभग १३५ आर्य समाजों के लिए वेदप्रचार की व्यापक योजना तैयार की जाती है । देशभर के लब्धप्रतिष्ठ वैदिक विद्वानों व आर्य भजनोंपदेशकों को आमन्त्रित कर उन्हें अलग-अलग आर्य समाजों में भेजा जाता है । किसी आर्य समाज में सप्ताहभर के, किसी में पाँच दिन के, तो किसी में तीन या दो दिन के कार्यक्रम रखे जाते हैं। उन-उन आर्य समाजों में प्रात: बृहद् वेदपारायण यज्ञ, धार्मिक व आध्यात्मिक विषयों पर भजन तथा प्रवचन का आयोजन होता है। इसी तरह रात्रि में सामाजिक, राष्ट्रीय एवं समसामायिक विषयों विद्वानों के कार्यक्रम सम्पन्न होते हैं। साथ ही राष्ट्र के नौनिहाल बालकों व युवा छात्रों में नैतिकता, देशभक्ति, समाजसेवा, चरित्रनिर्माण व सुसंस्कारों का बीजारोपण हो, इस उद्देश्य से स्कूल व कॉलेजों में व्याख्यान रखे जाते हैं। सायंकाल पारिवारिक सत्संग के माध्यम से घर व परिवार में वैदिक सिद्धान्तों को प्रसारित करने के लिए प्रयत्न किये जाते हैं। यह सारा कार्यक्रम यशस्वी होता है वैदिक विद्वानों व भजनोपदेशकों के सहाय्यता से× यह सभी विद्वज्जन विशेषत: उत्तर भारत से आमन्त्रित प्रचारक पूरे एक माह तक महाराष्ट्र की संस्कृति, प्रकृति व आर्यजनों में स्नेहिल भावनाओं से एकरूप हो जाते हैं। सिर्फ ऋषि दयानन्द के मिशन को लोगों तक पहुंचाने व आगे बढाने के लक्ष्य को सामने रखकर वे बडी उदारता व समर्पण भाव से सहयोग देते हैं। सभी प्रकार के कष्टों को सहते हुए भोजन व निवासादि की जैसी भी व्यवस्था हो अथवा दक्षिणा भले ही कम मिले, लेकिन सन्तोषपूर्वक प्रसन्नता के साथ इन सब को वे स्वीकार करते हैं। इन्हीं समर्पित वेदप्रचारकों के बल पर ही हमारा श्रावणी अभियान सफल होता है।

इसके साथ ही स्थानीय आर्य कार्यकर्त्ता उतने ही उत्साह के साथ इस अभियान को सफल बनाने में अग्रणी होते हैं। अपने-अपने वेदप्रचार उत्सव की तैयारी में वे कुछ दिनों पहले से ही जुट जाते हैं। विज्ञापन पत्र छपवाकर कार्यक्रमों को लोगों तक पहुंचाना, प्रत्यक्ष या दूरभाष पर सम्पर्क कर अधिकाधिक लोगों को आमन्त्रित

करना, यजमानों की निश्चिति, चंदा इकट्ठा कर आर्थिक सहयोग लेना, विद्वानों की भोजन, निवास की समुचित व्यवस्था करना, सभा को वेदप्रचारनिधि प्रदान करना आदि कार्यों में सभी आर्यजन बडी तन्मयता से एकजुट होकर लगे रहते हैं। इससे सर्वत्र वैदिक विचारों के प्रचार का माहौल तैयार होता है, जिससे की समाज में नयी जागृति उत्पन्न होती है। पूरे उत्साह के साथ वेदसन्देश को सामान्य लोगों तक पहुंचाने का इस प्रकार का कार्य महाराष्ट्र सभा प्रतिवर्ष श्रावण माह में पूरी लगन के साथ करती है।

इस वर्ष १२ अगस्त से ९ सितम्बर के दौरान श्रावणी वेदप्रचार अभियान उत्साहपूर्वक मनाया गया। जिसमें उत्तर भारत से ६ विद्वान व ६ भजनोपदेशक आमन्त्रित किये गये थे। साथ ही महाराष्ट्र के लगभग ३५ विद्वानों को भी बुलाया गया था। इन सभी ने मिलकर विभिन्न नगर व ग्राम तक पहुंचकर बडी श्रद्धा व लगन के साथ वैदिक मानवता का सन्देश जन-जन तक पहुंचाने का पवित्र कार्य किया। हमारी सभा के पैनी दृष्टिवाले कर्मठ मार्गदर्शक व कुशल संगठक पू.डॉ.ब्रह्ममुनिजी के निर्देशन में उनकी सूझबूझ के कारण वैदिक ज्ञान का यह मानवकल्याणकारी उपक्रम विगत् २१ वर्षों से राज्य में होता आ रहा है। सभा के संरक्षक पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी के आशीर्वाद एवं अन्य सभी पदाधिकारियों का पूर्ण सहयोग इसकी सफलता में अतिशय महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

कुलमिलाकर इस वर्ष का श्रावणी महोत्सव यशस्वी रहा। इस अभियान को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले सभी विद्वानों, भजनोपदेशकों, सभी आर्य समाज के पदाधिकारियों, सदस्यों, दानदाताओं का हम हृदय से आभार प्रकट करते है और भविष्य में भी उनके द्वारा सहयोग की अपेक्षा रखते है ।

-० आर्य समाजों से निवेदन ०-

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा आगामी जनवरी २०१९ में राज्य के चार स्थानों पर ÷ध्यानयोग शिविर' लेना चाहती है। प्रत्येक शिविर एक सप्ताह का होगा, जिसमें प्रात: एवं सायं दो या तीन घण्टों तक आमन्त्रित योगी साधकों के सान्निध्य में ध्यान योग का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

अत: जिन आर्य समाजों को यह ध्यान योग शिविर आयोजित करना है, कृपया वे शीघ्र ही सभा से सम्पर्क करें।

- राजेन्द्र दिवे(९८२२३६५२७२)
मन्त्री, म.आ.सभा

आर्य महासम्मेलन की सफलता पर
आयोजक/संयोजकों का हार्दिक अभिनन्दन ×

अनोखी दूरदृष्टि, प्रबल पुरुषार्थ, कडी मेहनत, अद्‌भुत संगठन कौशल्य, तथा प्रखर सैद्धान्तिक निष्ठा के बल पर अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने में सक्रिय भूमिका निभानेवाले आयोजक व संयोजकों तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारियों व आर्य कार्यकर्त्ताओं का हृदय से अभिनन्दन एवं शुभकामनायें।**(महासम्मेलन का वृत्तान्त आगामी अंक में प्रकाशित किया जायेगा।)**

– सभी पदाधिकारी, महाराष्ट्र आ.प्र.सभा

आर्य समाज परली-वै. अंतर्गत

स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम

–० आप भी सहाय्यक बनें ०–

कृपया गुरुकुल प्रेमी माता–बहनों व सज्जनों की सेवा में निवेदन है कि, वेद, व्याकरण, संस्कृत के अध्ययन व अध्यापन तथा आदर्श मानव निर्माण की दृष्टि से आर्य समाज परली द्वारा शहर से ३ कि.मी.दूरी पर आप सभी का प्यारा गुरुकुल **÷स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम’** इस समय प्रगतिपथ पर हैं। पर्वतीय प्राकृतिक सौंदर्य एवं रम्य वातावरण में छोटे–छोटे २० ब्रह्मचारी आचार्य, अध्यापकों के चरणों में बैठकर ज्ञान ग्रहण एवं सुसंस्कारों की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। दानदाता सज्जन दिल खोलकर पवित्र भाव से दान दे रहे हैं। शासन से किसी प्रकार का अनुदान न लेते हुए सारा खर्चा आर्य समाज परली के पदाधिकारी एवं अन्य सहयोगियों द्वारा गुरुकुल का संचालन हो रहा हैं। बढते खर्चे को देखते हुए गुरुकुल सेवा समिति द्वारा सभी दान–दाताओं को आर्थिक सहयोग के लिए अपील की जा रही है। बहुत सारे सज्जन एवं दानी आर्य कार्यकर्त्ता प्रतिमाह रू.१००० देने के लिए कृतसंकल्पित हो चुके हैं। कृपया आप भी अपनी पवित्र दानराशियाँ (रू.१०००, रू.५०००, रू.११०००) इस गुरुकुल के लिए निम्नलिखित बैंक खाते पर भेजकर पुण्य के भागी बनें।

खाता धारक का नाम – मंत्री, आर्य समाज परली–वैजनाथ
बैंक का नाम–भारतीय स्टेट बैंक, मोंढा मार्केट, परली–वै. जि.बीड
बैंक खाता क्र.11154152876, IFSC Code SBIN0003406

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा व

स्व.श्रीमती शान्तिदेवी मायर(लन्दन)मानव निर्माण एवं

सेवा समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में

मानव जीवन निर्माण अभियान के अन्तर्गत

विद्यालयीन व महाविद्यालयीन छात्रों के नवनिर्माण हेतु

* वैदिक व्याख्यानमाला *

दि.३ से ३१ दिसम्बर २०१८

प्रिय सज्जनो ×

यदि छात्रावस्था में ही श्रेष्ठ मानव बनने हेतु संस्कार मिलें तथा सुमार्ग एवं सद्विचारों से जीवन का पथ प्रशस्त हुआ, तो देश की नई पीढी सर्वोत्तम बनने तथा उनका जीवन शाश्वत सुखी होने में विलम्ब न लगेगा। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के निर्माण की यही एक अनुपम विधि है। मानव जीवन का अपूर्व कल्याण सिद्ध करने तथा समाज में सुख-समृद्धि एवं शान्ति प्रस्थापित करने की यही एकमात्र कुंजी है। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभाने संस्कारित आदर्श युवक व युवतियों का नवनिर्माण करने तथा उनपर मानवता के संस्कार डालने हेतु ÷÷मानव जीवन निर्माण अभियान'' का कार्यान्वयन किया है। इस योजना के अनुसार आगे बताए अनुसार विविध विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में व्याख्यानों का आयोजन किया जा रहा है। इस सन्दर्भ में वैदिक व्याख्यानमाला जिन-जिन स्थानों पर आयेजित की जा रही है, वहाँ की आर्य समाजें व वहां के सामाजिक कार्यकर्त्ता उत्तम ढंग से व्याख्यानों को सम्पन्न करावें व सूचनाओं का पालन करें।

* आमंत्रित मार्गदर्शक विद्वान व भजनोपदेशक *

- पं.प्रियदत्तजी शास्त्री (वैदिक विद्वान, हैदराबाद),
- पं.श्रीरामजी आर्य (वैदिक विद्वान, लातूर)
- पं.सुधाकरजी शास्त्री (वेदप्रचार अधिष्ठाता, म.आ.प्र.सभा),
- पं.लक्ष्मणराव आर्य(वैदिक विद्वान, परली)
- पं.प्रतापसिंहजी चौहान(भजनोपदेशक, म.आ.प्र.सभा),
- पं.आर्यमुनिजी(व्यवस्थापक विद्वान,परली)
- श्री दत्तराव गित्ते(व्यवस्थापक)

अत: आर्य समाजों से अनुरोध है कि वे अपने अथवा समीपस्थ अन्य नगर व ग्रामों के विद्यालयों से अभी से सम्पर्क कर व्याख्यानों का आयोजन करने की व्यवस्था करें। आगे निर्देशित दिनांकों के अनुसार व आर्य समाजें अपने ग्राम व नगर के स्कूलों एवं महाविद्यालयों से सम्पर्क कर व्याख्यान रखें। प्रस्तावित व्याख्यानमाला के लिए प्रमुख मार्गदर्शक के रूप में उपरोक्त दिये विद्वानों एवं भजनोपदशकों के व्याख्यान व उपदेश होंगें।

आर्य समाजें व्याख्यानमाला की सूचना प्राप्त होते ही स्थानिक स्कूल व कॉलेजों से सम्पर्क करके कार्यक्रम निश्चित करें। छुट्टियां आने पर वसतिगृह, निवासी विद्यालयों तथा सार्वजनिक स्थानों पर कार्यक्रम रखें।

(कार्यक्रम रुपरेखा-आगे देखियेगा)

१) आर्य समाज, अंबाजोगाई	३ दिसम्बर २०१८
२) आर्य समाज, रेणापुर	४ दिसम्बर २०१८
३) आर्य समाज, लातूर	५ दिसम्बर २०१८
४) आर्य समाज, माडज	६ दिसम्बर २०१८
५) आर्य समाज, कदेर/औराद	७ दिसम्बर २०१८
६) आर्य समाज, नळदूर्ग/अणदूर	८ दिसम्बर २०१८
७) आर्य समाज, उमरगा वसतिगृह	९ दिसम्बर २०१८
८) आर्य समाज, उमरगा	१० दिसम्बर २०१८
९) आर्य समाज, गुंजोटी	११ दिसम्बर २०१८
१०) आर्य समाज, तुरोरी/कासारशिरसी	१२ दिसम्बर २०१८
११) आर्य समाज, निलंगा	१३ दिसम्बर २०१८
१२) आर्य समाज, औराद शहाजानी	१४ दिसम्बर २०१८
१३) आर्य समाज, देवणी/वलांडी	१५ दिसम्बर २०१८
१४) आर्य समाज,उदगीर	१६ दिसम्बर २०१८
१५) आर्य समाज, देगलूर	१७/१८ दिसम्बर २०१८
१६) आर्य समाज, धर्माबाद	१९/२० दिसम्बर २०१८
१७) आर्य समाज, मुदखेड	२१ दिसम्बर २०१८
१८) आर्य समाज, नांदेड	२२ दिसम्बर २०१८
१९) आर्य समाज, परभणी	२३/२४ दिसम्बर २०१८
२०) आर्य समाज, गंगाखेड	२५ दिसम्बर २०१८
२१) आर्य समाज, परळी शहर	२६ दिसम्बर २०१८
२२) आर्य समाज, घाटनांदूर	२७ दिसम्बर २०१८
२३) आर्य समाज, धर्मापुरी	२८ दिसम्बर २०१८
२४) आर्य समाज, सिरसाळा	२९ दिसम्बर २०१८
२५) आर्य समाज, मांडवा/सारडगांव	३० दिसम्बर २०१८

सूचनाएँ :- ■ जिन आर्य समाजों को तारीखें व समय मिला है, वे प्राप्त समय में विद्वानों का अधिक से अधिक लाभ लेवें। ■विद्वानों के मार्गो पर समीपस्थ अन्य नगर के सकूल व कॉलेजों में भी व्याख्यानों का आयोजन करें। ■विद्वानों की भोजन व निवास की व्यवस्था सुनियोजित व उत्तम प्रकार से करें। ■समय व्यर्थ न खोवें। ■ व्याख्यानों का नियोजन करके उसकी सभा को जानकारी दें। ■आर्य समाज में कार्यक्रम लेने का विचार न करें, हवन आदि भी समय को देखकर ही करें, क्योंकि मुख्य उद्देश्य स्कूल एवं कॉलेज में व्याख्यानों का है। ■**वाहन के लिए तेल एवं इस अभियान के खर्चे के लिए अपनी राशियाँ सभा को भेज देवें।** ■छात्रों में वैदिक साहित्य वितरीत करने तथा ग्रंथालय में वैदिक साहित्य भेट देने की योजना बनावें। ■ साहित्य भेट देने हेतु किसी दानदाता की तलाश करें व उन्हें प्रेरित करें। ■रात्रि में आर्य समाज के बाहर सार्वजनिक स्थल पर जाहिर व्याख्यान का आयोजन करें। ■ छुट्टी के दिन नगर तथा गांव के वसतिगृह, आश्रमशाला एवं सार्वजनिक स्थानों पर व्याख्यान रखें।

-: विनीत :-

योगमुनि	**राजेन्द्र दिवे**	**उग्रसेन राठौर**	**पं.सुधाकर शास्त्री**
(प्रधान)	(मन्त्री)	(कोषाध्यक्ष)	(वेदप्रचार अधिष्ठाता)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, परली-वैजनाथ

।।ओ३म्।।

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश — परब्रह्मच जाणण्यायोग्य...×

य एष सुप्तेषु जागर्ति कामं कामं पुरुषो निर्मिमाणः।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म तदेवामृतमुच्यते।
तस्मिंल्लोकाः श्रिताः सर्वे तदु नात्येति कश्चन। एतद् वै तत्।।

(कठोपनिषद्–५/८)

अर्थ– जो हा संपूर्ण ब्रह्मांडामध्ये व्यापक परब्रह्म आहे, तो प्रत्येक कामना(इच्छा–आकांक्षा) च्या पूर्ततेसाठी सर्व जग आणि जगातील सर्व पदार्थांची निर्मिती करीत प्रमाद, आळस आणि विद्रावस्थेत मग्न असलेल्या जीवांमध्ये जागत आहे. तो सर्वांना यथायोग्य जाणतो. तो सर्व जगाला रचणारा आणि शुद्धस्वरूप आहे. असा हा ईश्वरच सर्वांमध्ये मोठा आहे. हा परमेश्वर जन्ममरणादी बंधनांपासून विरहीत असल्याने नेहमी मुक्त आणि अविनाशी म्हंटला जातो. त्याच ब्रह्म्यामध्ये पृथ्वी, सूर्य व इतर सर्व लोक स्थित आहेत. त्या ब्रह्म्याचे उल्लंघन निश्चितच कोणीही करू शकत नाही. याच निश्चयाने तो जाणण्यायोग्य ब्रह्म आहे.

दयानंद वाणी — उपासनेचे मोठे फळ...×

ज्याप्रमाणे थंडीने कुडकुडणारा माणूस अग्नीजवळ जाताच त्याची थंडी एकदम नाहीशी होते, त्याप्रमाणे परमेश्वराच्या सान्निध्यात गेल्यामुळे(उपासनेमुळे) सर्व दोष व दु:खे नाहीशी होऊन परमेश्वराच्या गुणकर्मस्वभावाप्रमाणे जीवात्म्याचे गुणकर्मस्वभाव पवित्र होतात. म्हणून परमेश्वराची स्तुती, प्रार्थना व उपासना अवश्य केली पाहिजे. उपासनेची इतर फळे जरी दूर ठेवली तरी उपासनेमुळे आत्म्याचे बळ इतके वाढते की पवर्तप्राय दु:ख कोसळले तरी तो घाबरत नाही आणि सर्व काही सहन करण्याचे सामर्थ्य त्याला प्राप्त होते. ही काय लहानसहान गोष्ट आहे? जो परमेश्वराची स्तुती, प्रार्थना व उपासना करीत नाही तो कृतघ्न व महामूर्खही असतो, कारण ज्या परमेश्वराने प्राणिमात्राच्या सुखासाठी सर्व पदार्थ निर्माण केले आहेत, त्यांच्या गुणांना विसरणे, देवच न मानणे, ही कृतघ्नता व मूर्खता आहे. **(सत्यार्थ प्रकाश–७ वा समुल्लास)**

१३५ व्या निर्वाण दिनानिमित्त ऐतिहासिक लेख -

मंत्रदाता ऋषी - ÷महर्षी दयानंद'

युगप्रवर्तक महर्षी दयानंद सरस्वती यांच्या जीवन व कार्यावर आर्य समाजेतर प्रसिद्ध सारस्वतांनी आपल्या प्रखर लेखनीतून प्रकाश टाकला आहे. महाराष्ट्रातील थोर साहित्यीक, प्रख्यात वक्ते(स्व.) प्राचार्य डॉ.शिवाजीराव भोसले(माजी कुलगुरु, डॉ.बा.आं. मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद) यांनीही आपल्या बहारदार शैलीतून स्वामी दयानंदावर मौलिक लेख लिहिला आहे व त्यांनी तो आपल्या **÷दीपस्तंभ'** या ग्रंथात प्रसिद्ध केला. त्या काळी दै.सकाळ या वृत्तपत्रातूनही हा लेख प्रकाशित झाला होता. महर्षी दयानंदांच्या चरित्र अभ्यासकांना प्रेरणा देणारा प्रस्तुत लेख देत आहोत.

– संपादक

फार मोठी माणसे कधी–कधी लहान मुलांच्या निरागसतेने वागतात. त्यांनाही गंमतजंमत करण्याची लहर येते. दि.२१ सप्टेंबर १८७२ या दिवशी कलकत्ता शहरात घडून गेलेला एक मनोरंजक प्रसंग× कलकत्त्यास आलेल्या महर्षी दयानंद सरस्वतींना भेटण्यासाठी ब्राह्म समाजाचे अध्वर्यू केशवचंद्र सेन हे त्यांच्या निवासस्थानी गेले होते. दोघांची यापूर्वी प्रत्यक्ष गाठभेट झाली नव्हती. पहिल्या भेटीत मनमोकळे बोलणे झाले, धर्मचर्चा झाली. केशवचंद्रांनी स्वामीजींना सहज विचारले, ÷÷कलकत्त्यात आलात, राहिलात, पण केशवचंद्रांना भेटलात का?'' दयानंदांनी होकार भरला. केशवचंद्र पुन्हा विचारते झाले, ÷÷सध्या तर ते येथे नाहीत, मग तुम्ही त्यांना भेटलात ते कधी?'' दयानंदांनी उत्तर दिले, ÷÷मी आता त्यांच्याशीच बोलतो आहे.'' केशवचंद्र थक्क झाले. त्यांनी पुन्हा विचारणा केली, ÷÷तुम्ही मला ओळखले तरी कसे?'' दयानंद म्हणाले, ÷÷आतापर्यंत तुमची व माझी जी तत्त्वचर्चा झाली, ती अन्य कोणाशी होऊ शकली नसती.'' हे ऐकून ते दोन तत्त्ववेत्ते खळखळून हसले.

त्याच सुमारास आणि त्याच नगरात घडलेला आणखी एक प्रसंग× देवेंद्रनाथ टागोरांनी दयानंदांना आपल्या घरी बोलावणे केले. दिवस माघोत्सवाचे होते. टागोरांचा तो जोडासाँको वाडा माणसांनी फुलून गेला होता. महर्षी दयानंद आणि महर्षी देवेंद्रनाथ परस्परांना भेटणार होते. दोन महापुरुषांच्या भेटी दृश्य डोळे भरून पाहण्यासाठी अनेकजण अगोदरच येऊन थांबले होते. दयानंद आले. सर्वांनी त्यांना उत्थापन दिले. स्वामीजी स्थानापन्न झाले. देवेंद्रांनी

आपल्या मुलांना आज्ञा केली. त्यांनी पुढे येऊन वेदमंत्रांचे सुस्वरगान केले. ते ऐकून स्वामीजी संतुष्ट झाले. त्यांनी आशीर्वादासाठी हात उचलला.तेंव्हा त्यांच्यापाशी उभा होता उद्याचा महाकवी आणि देवेंद्रांचा लाडका रवी× त्यावेळी बारा वर्षाचे असणारे रविंद्रनाथ आपल्या आठवणीत सांगतात, ÷÷स्वामीजींचे पाणीदार डोळे, त्यांच्या मुखमंडलावर विलसणारी प्रसन्नता, त्यांचे तेजस्वी विवेचन, त्यांची साधी राहणी आणि उच्च विचारसरणी, त्यांचे एकूण व्यक्तिमत्त्व आमच्या मनात नाना प्रकारचे भावतरंग निर्माण करून गेले.'' दयानंदांच्या या कलकत्ता-भेटीत किती वंगपुत्रांनी त्यांना अभिवादन करावे? दयानंदाचा अधिकार आणि योग्यता ओळखून कलकत्त्यातील सगळी कर्ती माणसे त्यांना भेटून गेली. त्यात राजनारायण बोस होते, ईश्वरचंद्र विद्यासागर होते, प्रतापचंद्र मुजमदार आणि अक्षयकुमार दत्तही होते. रमेशचंद्र दत्त, केशवचंद्र सेन, प्रतापचंद्र घोष, गंगाधर कविराज असे अनेकजण होते. एका विरक्ताच्या, संन्यस्ताच्या निष्कांचन यतीच्या दर्शनासाठी मोठ्या माणसांची रीघ लागावी, हे एक नवल होते. ज्यांच्या दर्शनासाठी लोकांची उत्सुकता शिकेला पोहोचली होती, त्या म.दयानंदाचे जीवन हे सुद्धा नवलच होते.''

धर्मतत्त्वांचा अन्वयार्थ लावण्यात ज्यांना धन्यता वाटते असे कांही अपवादभूत आत्मे संस्कृतीच्या क्षितिजावर काही काळ दिसतात, आपल्या तेजाने तळपतात आणि आपल्या पश्चात प्रकाशाची स्मृती ठेवून अंतर्धान पावतात. महर्षी दयानंद हे याच कोटीतील एक महापुरुष होते.

स्वामी दयानंद यांचा जन्म दि.२० सप्टेंबर १८२४ या दिवशी सौराष्ट्रात असणाऱ्या मोरवी संस्थानातील टंकारा या गावी झाला. दयानंदांचे पाळण्यातले नाव मूलशंकर असे होते. त्यांना कोणी दयालजी म्हणून हाक मारीत. त्यांचे वडील करसनजी त्रिवेदी हे एक जमीनदार आणि शासनाच्या वतीने महसूल गोळा करणारे जमेदार होते. ते परम शिवभक्त होते. त्यांची आई अमृतबेन प्रेमापोटी सर्वांची लाडकी ÷अमूबा' झाली होती. दयानंदांना दोन भाऊ आणि दोन बहिणी होत्या. सर्वांत वडीलधारे तेच असल्यामुळे घराचे आशास्थानही तेच होते. दयानंदांचे वडील हे पापभीरू, कर्मकांडप्रवण व संप्रदायनिष्ठ असे शैव ब्राह्मण होते. त्यांचे स्वत:चे असे एक शिवमंदिर होते. या मंदिरात अगदी बालपणी दयानंदांना रूद्र आणि शुक्लयजुर्वेद यांची संथा देण्यात आली. दहाव्या वर्षापासून ते पार्थिव पूजा करू लागले. दयानंदांच्या व्यक्तिमत्त्वाची जडणघडण सांप्रदायिक पद्धतीने व्हावी, अशी वडिलांची अपेक्षा होती. त्या प्रकारचे

संस्कारपाठ ते मुलाला देत होते.

वयाच्या पाचव्या वर्षी दयानंदांनी विद्यार्जनास आरंभ केला. आठव्या वर्षी त्यांची मुंज झाली. बालपण संपण्यापूर्वीच या कुशाग्र बुद्धीच्या मुलाने वेदांच्या अभ्यासास आरंभ केला. व्याकरण, तर्कशास्त्र आणि साहित्यशास्त्र यांचाही परिचय करून घेतला. व्यासंगामुळे बुद्धीला प्राप्त होणारी प्रगल्भता त्यांच्या वाट्याला तुलनेने लवकर आली. ते अकाली प्रौढ झाले. प्रौढपणी तर ते सर्वज्ञ होतील, अशी चिन्हे दिसू लागली. लहानांनी एवढ्या त्वरेने मोठे व्हावे हे मोठ्यांना मान्य नसते. पुढे महर्षी म्हणून मान्यता पावलेले दयानंद वयाने कधीतरी लहान होतेच. बालपणाचा काळ म्हणजे जीवनाची सकाळ× जीवनातला सर्वांत प्रसन्न प्रहर तो× आनंदाला बहर येतो तो याच प्रहरी. या आनंदाचा आस्वाद ज्यांच्या संगतीत घ्यावयाचा तो आप्तांचा परिवार हे बालपणी लाभलेले ऐश्वर्य असते. न मागता मिळणाऱ्या या वैभवाचे वाटेकरी होणे हा सर्वांच्या पत्रिकेतील सुयोग असतो. दयानंदांच्या पत्रिकेत मात्र हा योग नव्हता. त्यांना प्रिय असणारी त्यांची लाडकी बहिण त्यांच्या डोळ्यांदेखत काळाने हिरावून नेली. त्यांच्यावर मायेची पाखर घालणारे काका असेच तडकाफडकी जग सोडून गेले. बहीण आणि काका, दोघेही कॉलेऱ्याचे बळी पडले. या दारुण दुःखाच्या दर्शनाने त्यांच्यामधला ÷बुद्ध' जागा झाला. मरण हे सर्वांच्याच वाट्याला येणारे असेल आणि जीवनाला लागणारे मरणाचे ग्रहण सुटणार नसेल तर जीवनाला मरण हेच नाव उचित ठरेल. या मृत्युवर मात करण्याचा आणि अमरत्वाच्या परगण्यात प्रवेश करण्याचा एखादा मार्ग असेल का ? कोणीतरी त्यांना सांगितले की, योगाभ्यासाने माणसाला अमरत्व प्राप्त होते. दयानंदांनी योगसाधनेचा निश्चय केला. तेंव्हा ते वीस वर्षाचे होते. योगसाधनेसाठी घरादाराचा त्याग करून निःसंग वृत्तीने रानावनात राहावे लागते, याची दयानंदांना कल्पना होती. अंतर्यामी असणारी वैराग्याची उर्मी प्रबल होत चालली होती. त्यांचे कोठेच लक्ष लागत नव्हते. त्यांचे मन घरादारावरून उडाले होते. वडिलांना हा वृत्तिपालट जाणवला. पाखरू उडून जाण्यापूर्वी त्याला सोन्याच्या पिंजऱ्यात कोंडून ठेवावे, असे त्यांना वाटू लागले. समोर संसारसुखाचे दाणे टाकले म्हणजे प्रपंचाच्या छायेत पोराची विरक्ती विरून जाईल आणि ते चारचौघांसारखे राहत्या घरी जगात रुतेल, रमेल आणि रुळेल असा त्यांचा तर्क होता.

लग्नाची पूर्वतयारी झाली. पक्वान्नांचा दरवळ सर्वत्र पसरला. रोज नवे सोयरे दिसू-भेटू लागले. सगळा परिसर मुलां-माणसांनी गजबजून गेला आणि अशा या घाईगर्दीत

दयानंदांनी पलायन केले. प्रथम ते वीस मैलांच्या अंतरावर राहणाऱ्या ÷सायला जोगी' बाबाच्या मठात गेले. तेथे मनाचे समाधान होईना म्हणून नंतर ÷लाला भगत' नावाच्या एका संन्यस्तांच्या आश्रयास ते गेले. त्यानंतर ते सिद्धीपूर येथील यात्रेस गेले. या यात्रेत एखादा महायोगी भेटेल, अशी आशा त्यांना वाटत होते. पण प्रत्यक्षात त्यांच्या वाट्याला आली ती त्यांचा पाठपुरावा करणारी घरची माणसे. त्यांच्या नजरकैदेत दयानंदांना स्थानबद्ध होऊन राहावे लागले. यातून सुटकेचा मार्ग म्हणून त्यांनी काशीला जाण्याची आणि तेथे राहून व्याकरण, वैद्यक आणि ज्योतिष या विषयांचा अभ्यास करण्याची आपली इच्छा बोलून दाखवली आणि जाण्यासाठी सर्वांनी अनुमती मागितली. ती त्यांना मिळाली नाही. तोंड दुधाने पोळले होते. ताक फुंकून पिण्याची वेळ आली होती. वडीलधारे मुलाला नजरेआड ठेवण्याच्या मन:स्थितीत नव्हते. दयानंदांना बाविसावे वर्ष लागले. त्यांची तगमग होतच होती. स्वत:च्या विचाराने आणि प्रयत्नाने आपली दिशा ठरविण्याचा विचार ते करू लागले. ते वडिलधाऱ्यांना विटले. पूजाविधीला कंटाळले. एका शिवरात्रीच्या पिंडीवर मुक्त विहार करणारा एक नगण्य उंदीर पाहून तर ते उद्विग्न झाले.(हा प्रसंग त्यांच्या वयाच्या १४ वर्षीचा आहे.-संपादक) कुठे गेले त्या महारुद्राचे सामर्थ्य? असा विचार त्यांचे मन पोखरु लागला. त्यांना मर्त्यपणाच्या जाचातून मुक्त करणारा मार्ग हवा होता. समोर तो दिसत नव्हता. त्यांनाच तो शाधावा लागणार होता. तो सुखाचा नव्हता हे उघड होते. अन्नाशिवाय, वस्त्राशिवाय विजनवास पत्करून ही वनवासाची वाट पायतळी घालावी लागणार होती. दयानंदांनी मनाशी निर्धार केला, नियतीशी करार केला आणि अमरत्वाच्या प्राप्तीसाठी मर्त्यजनांची ताटातूट पत्करली.

स्वामी निघाले. तेंव्हा त्यांनी पूर्वाश्रमीच्या नावागावाचा त्याग केला. ते ब्रह्मचारी शुद्धचैतन्य या नावाने वावरू लागले. नर्मदेच्या तीरावर त्यांना संस्कृत शिकवणारे एक दाक्षिणात्य पंडित कृष्णशास्त्री भेटले. त्यांच्या सहवासात त्यांना खंडित झालेले संस्कृत अध्ययन मार्गी लावले. मग राजगुरु नावाचे एक वेदान्ती भेटले. त्यांनी दयानंदांना वेदांतसूत्रे समजावून दिली. या धर्मयात्रेत सतत कोणीतरी भेटतच होते. चाणोद कर्नाली या गावी एक अज्ञात संन्यासी भेटला. त्यांच्या उपदेशावरून त्यांनी विधिपूर्वक संन्यास घेतला व ÷दयानंद' हे नाव धारण केले. पुढे पूर्णानंद सरस्वती या नावाचे एक दंडी स्वामी भेटले आणि त्यांना अनुग्रहपूर्वक त्यांचे नामकरण केले ते

÷दयानंद सरस्वती' असे× योगानंद नावाचे एक योगविद्याविशारद व्यासाश्रमात राहात होते. दयानंदांनी त्यांच्याकडून योगप्रक्रियांचे ज्ञान संपादन केले. या योगविद्येत पारंगत असे शिवानंदगिरी, ज्वालानंदपुरी आणि अबूच्या पहाडात भेटलेले भवानीगिरी हे त्या क्षेत्रातले त्यांचे मार्गदर्शक होते. केदारघाटाला भेटलेले गंगागिरी हे सहृदय संन्यस्त आणि गाढे विद्वान होते. दयानंदांना माणसे भेटत होती, कांही काळ त्यांना ती आवडत होती आणि नंतर ती त्यांच्या मनातून व मर्जीतून उतरत होती. त्यांचे सर्वार्थाने समाधान करू शकेल, असा पूर्ण पुरुष त्यांच्या आढळात येत नव्हता. त्यांचा शोध अखंड चालूच होता. भ्रमन्तीला खंड नव्हता. हिमालयात नाना पंथांचे ज्ञानी, योगी, संन्यासी साधना करीत असतात. त्यांच्यापैकी कोणी जीवनमार्गावरचा वाटाड्या म्हणून भेटतो का? हे पाहण्याची उत्कंठा होती. हिमालयाविषयीच्या या ओढीतून व आकर्षणातून स्वामींनी या नगाधिराजाच्या दिशेला आपली पावले वळवली. त्या प्रदेशातील सर्व ज्ञात आणि अज्ञात स्थानांचा त्यांनी धांडोळा घेतला. रूद्रप्रयाग, शिवपुरी, गुप्तकाशी, गौरीकुंड, भीमगुहा, तुंगनाथ, ऊरवी मठ ही साधनास्थळे पाहिली. मंदाकिनीच्या उजव्या काठावरचा उरवी मठ हे एक लहानसे संस्थान आहे. तेथील मठाधिपती हा परमार्थाला आणि भक्तिमान व्यक्तींच्या भावविश्वातला प्रतिछत्रपती म्हणूनच वावरत असे. दयानंद या मठात काही दिवस राहिले. त्यांचे ज्ञान, वैराग्य, मुद्रेवरचे तेज, वृत्तीतील गांभीर्य पाहून मठाधिपती प्रभावित झाले. त्यांनी दयानंदांना याची देही, याची डोळा आपले उत्तराधिकारी म्हणून नेमण्याची तयारी दाखवली. दयानंदांनी आपल्या विरक्त वृत्तीचा अनुभव मठाधिपतीला दिला. त्यांनी हे पद नाकारले. त्या महंतांना आश्चर्य वाटले. त्यांनी दयानंदाना विचारले, ÷÷तू वर्षानुवर्षे असा वेड्यासारखा फिरतोस तो कशासाठी? तुला हवे तरी काय?'' दयांनंदांनी महंतांना ऐकवले, ÷÷सत्य, योगविद्या आणि मोक्ष हे माझे पारमार्थिक प्राप्तव्य आहे.''

साधकाच्या मनाची तडफड आणि जिवाची काहिली अनुभवतच जीवनाचा अर्थबोध घडावा या आकांक्षेने जगरहाटीचा त्याग करून दयानंद अज्ञाताच्या वाटेने आणि अंतरीच्या उमाळ्याने चालत राहिले. १८४५ ते १८६० असा पंधरा वर्षांचा काळ या शोधयात्रेत गेला. विंध्य, हिमालय, अरवली या पर्वतराजीतून, दऱ्याखोऱ्यातून, डोंगरकपारीतून कंदमुळावर निर्वाह करीत हा यतिराज चालत राहिला. त्यांच्या वाटेत बैराग्यांचे मठ आले. श्वापदांचे कळप आले. कधी सज्जनांचा संग घडला. कधी असंगांशी गाठ पडली. कधी तडीपार

झालेल्या गुन्हेगारांची भेट झाली. त्यांचे सर्व जीवन तपोमय झाले होते. तपाची तापदायकता ते अनुभवत होते. एकदा तर देहत्यागाचा विचारही त्यांच्या मनात आला. मनासारखा गुरु भेटत नाही, देव पुढची वाट दाखवीत नाही, दैवही अनुकूल नाही× अशा स्थितीत हे व्यर्थ जीवन कशासाठी व्यतीत करावयाचे? हे निराशेचे काहूर शमले हे त्यांच्याच विचारशक्तीमुळे. प्रथम ज्ञानप्राप्ती करून घ्यावी, कांही पुरुषार्थ करावा व मग देह सोडावा असा विचार अंतर्यामी स्फुरला आणि मनावरचे मळभ दूर झाले. पुन्हा मोठ्या उमेदीने त्यांनी आपले असिधाराव्रत आरंभले आणि आचरले.

दयानंदांच्या भ्रमणगाथेची समाप्ती घडावी असा क्षण जवळ येत चालला. फिरत-फिरत ते एका अंध साधूच्या आश्रमापर्यंत आले. या प्रज्ञाचक्षू पुरुषोत्तमाने दयानंदांना ओळखले आणि आपल्या आश्रमात ठेवून घेतले. हे स्वामी विरजानंद दयानंदांचे विद्यागुरु झाले. तप:पूत जीवन जगणाऱ्या ऐंशी वर्षाच्या या ज्ञानवृद्धाला दयानंदांच्या रूपाने एक स्वाध्यायी भेटला. या थोर पुरुषास विद्यादानाचे पुण्य जोडावयाचे होते. विद्याग्रहणाची पात्रता असणारा निगर्वी पण निग्रही, विनम्र पण प्रखर बुद्धीचा शिष्य स्वामींना हवा होता. आपल्या पायांनी चालत आलेला हा यती जगाला आपली महती पटवून देईल, असा विश्वास विरजानंदांना वाटला. स्वामी विरजानंद हे विलक्षण बुद्धीचे आणि विचक्षण वृत्तीचे वैदिक होते. वेदांचे प्रत्येक अक्षर त्यांनी पारखून घेतले होते. दयानंदांनी मथुरेस विरजानंदांच्या आश्रमात कांही वर्षे राहून वेद-वेदांगांचा मूलग्राही पद्धतीने अभ्यास केला. संशोधकांच्या तारतम्य बुद्धीने अक्षरांचा आशय जोखून घेतला. विरजानंदांनी दयानंदांच्या मन:पटलावर एक महत्त्वाचा विचार एखाद्या शिलालेखाप्रमाणे काळजीपूर्वक आणि कायमचा कोरून ठेवला. ते म्हणाले, ÷÷बेटा, महाभारतपूर्व वेदोक्त धर्म हाच खरा खरा वैदिक धर्म आहे. तो जातिभेदातीत आहे. वर्णव्यवस्था आणि वर्णवैषम्य त्याला मान्य नाही. वैदिक धर्म मानवतावादी आहे. तो स्त्री-पुरुषांना समान लेखतो. अस्पृश्यता मानत नहा. वर्ण ही कल्पना मानावयाची असेल तर गुणवत्तेची इयत्ता सूचित करणारी एक संज्ञा या अर्थाने ती मानावी लागेल. आपल्या गुणाच्या, अभिरूचीच्या आणि कर्तृत्वाच्या बळावर कोणाही व्यक्तीला एका वर्णातून दुसऱ्या वर्णात प्रवेश करता येईल, असे वैदिक धर्म सांगतो. स्त्रियांनी आणि सर्व वर्ण-जातीच्या लोकांनी संस्कृत भाषेचा आणि वेदविद्येचा निर्भयतेने अभ्यास करावा. रुढी आणि अंधश्रद्धा व्यर्थ आहेत. वैदिक धर्म जात मानत नाही. त्यामुळे आंतरजातीय

विवाहास विरोध करण्याचे कारण नाही. मात्र हे लक्षात ठेव की, हा शुद्ध वैदिक धर्म पुराणोक्त हिंदू धर्माहून वेगळा आहे. आजवर पुराणिकांच्या प्रवचनांनी आणि पोटासाठी पोपटपंची करणाऱ्या परंपरेच्या पुजाऱ्यांनी आबालवृद्धांची दिशाभूल केली आहे. पुराणे ही नवलकथांची भांडारे आहेत. विसरून जा ती पुराणे आणि त्या कथा. वेदांतील मूळचे मंत्र आणि संहिता ही साक्षात प्रभूची नि:श्वसिते आहेत. या वैदिक विचारगंगेची विशुद्धता लोपली आणि कर्मकांडाच्या पात्रातून ती वाहात राहिली. या पुराणिकांपायी गंगाच प्रवाहपतित झाली. या गंगेचे शुद्धीकरण करून तिच्या संजीवक सामर्थ्याच्या बळावर या गतप्रभ राष्ट्राचे उत्थान घडवण्याचे कार्य तू कर.'' दयानंद वचनबद्ध झाले. गुरुच्या आज्ञेचे अंकित झाले.

दयानंद हे गुरुदेव विरजानंदांचे मानसपुत्र झाले. गुरुच्या मनोगताची पूर्तता हे त्यांचे ब्रीद झाले. तो त्यांचा पुरुषार्थमार्ग झाला. त्यांनी ÷आर्यसमाज' या नावाचे एक ज्ञानपीठ, समाजसंस्कारपीठ स्थापन केले. ÷सत्यार्थ-प्रकाश' नावाच्या ग्रंथांची रचना केली. आपले उर्वरित जीवन समर्पित बुद्धीने शुद्ध वैदिक धर्म आणि संस्कृती यांच्या प्रचारासाठी वेचले. त्यांनी आपल्या देशबांधवांना निक्षून सांगितले, ÷÷पाच हजार वर्षापूर्वी या जगात वैदिक धर्माशिवाय अन्य धर्म नव्हता. काळाच्या ओघात लोक या धर्मापासून ढळले, अधर्माकडे वळले. त्यांचे पर्यवसान कौरव-पांडव युद्धात झाले. त्यानंतर अविद्येचा काळोख दाटला. मतामतांचा गलबला माजला. नाना मते, दर्शने, पुराणे आणि संप्रदाय यांचे निबिड अरण्य तयार झाले. माणसे चुकत गेली, फसत गेली, बुडत गेली. वेद हे स्वयंभू आणि स्वत:प्रमाणे आहेत. हे ईश्वराप्रमाणे नित्य आहेत. वेदांत ब्रह्मविद्या आहे, निसर्गशास्त्र आहे, धर्मशास्त्र आहे. पण वेद म्हणजे मंत्र आणि संहिता. उपनिषदे आणि पुराणे ही नंतरची आहेत. विश्वाचे पृथक्करण केले तर त्यात तीन घटकतत्त्वे आढळतील. निसर्ग अथवा प्रकृती,जीव किंवा चैतन्य आणि जगन्नियंता परमेश्वर ही ती मूलतत्त्वे होत. परमेश्वर हा नित्य आणि अविनाशी आहे. तो जन्माला येत नाही, अवतार घेत नाही किंवा शरीर धारण करीत नाही. तो मूर्तिरूपात मावत नाही. तो सर्वशक्तिमान सच्चिदानंदस्वरूपी आणि सर्वांतर्यामी आहे.''

÷÷वेद ईश्वरप्रणित आहेत. वेद हा ज्ञानाचा सागर व सत्याचे माहेर आहे. सर्व विद्यांचे उगमस्थान वेद हेच आहे. वेद शिकणे, शिकवणे, ऐकणे आणि ऐकवणे हा आर्यांचा परमधर्म आहे, अविद्येचा नाश आणि विद्येचा ध्यास हा आर्यांचा स्वभाव आहे. आपले आचरण धर्मानुसार घडले

पाहिजे. प्रत्येकाने सर्वांच्या उन्नतीत आत्मोन्नती आहे, असे गृहीत धरले पाहिजे.''

या विचारधनाचे वितरण सुलभतेने घडावे म्हणून स्वामींनी आपल्या प्रयत्नांना संस्थात्मक रूप देऊन त्यांना सामाजिक अधिष्ठान मिळवून दिले. दि.१० एप्रिल १८७५ रोजी गिरगावात प्रार्थना समाजाशेजारी असणाऱ्या डॉ.माणेकजी या पारशी गृहस्थांच्या उद्यानात ÷आर्य समाजा'ची स्थापना केली. १८८२ साली त्यांनी ÷**परोपकारिणी सभा**' या नावाची एक सहाय्यक संस्था काढली. तिच्या तेवीस विश्वस्तांत न्यायमूर्ती रानडे व लोकहितवादी हे होते. ऑक्सफर्ड विद्यापीठातील संस्कृतचे प्राध्यापक पंडित श्यामजी कृष्णवर्मा हे पण एक विश्वस्त होते. दयानंदांनी केवळ पुस्तकी विद्येचे पाट काढले नाहीत. समाजाच्या बांधणीसाठी व राष्ट्राच्या उभारणीसाठी लोकांपुढे एक विधायक कार्यक्रम ठेवला. भारतीयांनी स्वदेशी वस्तू वापराव्यात, स्वदेशी शासनाचा अट्टाहास बाळगावा, स्वधर्माचे रक्षण करावे, शासनव्यवस्थेत विद्वान, चारित्र्यवान आणि आर्थिक पावित्र्य पाळणारे माणसे असावीत.

समाज सर्व प्रकारच्या अंधश्रद्धांपासून मुक्त व्हावा. कोणी मूर्तिपूजा करू नये. वडापिंपळाला भजू नये. भूत, प्रेत, नाग, पीर यांना पूजाविषय करू नये. स्त्रियांनी वेदाध्ययन करावे. प्रसंगी युद्धशास्त्रही शिकावे. शिक्षणाशिवाय समाजाचा उत्कर्ष होणार नाही. पण शिक्षण हे भाडोत्री विद्यालयात देऊ नये. ते आचार्यकुलात किंवा गुरुकुलात द्यावे. निसर्गरम्य अणि निर्मळ वातावरणात मुलामुलींवर व्रतस्थ जीवनाचा संस्कार करावा. विवाहयोग्य होण्यासाठी मुलामुलींच्या बाबतीत वयाचे बंधन असावे. मुलीचे वय १७ वर्षे व मुलाचे वय २५ वर्षे असावे. धर्मांतरितांचे शुद्धिकरण आणि आर्य समाजाचे संघटन हे समाजधारणेचे महामंत्र व्हावेत.

झंझेच्या गतीने आर्यधर्माचा प्रसार करणाऱ्या दयानंदांना अनेक अनुयायी भेटले. राव आणि रंक, स्त्री आणि पुरुष, हरिजन व गिरिजन, विरक्त आणि प्रापंचिक अशी नाना प्रकारची माणसे स्वामींच्या आश्रयास आली. अनेक संस्थानिकांनी त्यांचा अनुग्रह घेतला. अनेक नगरांतून त्यांची व्याख्याने होऊ लागली. त्यांनी घेतलेला सत्याचा ध्यास आणि लिहिलेला ÷सत्यार्थप्रकाश' ही नव्या युगाची नांदी ठरली. त्यांच्या या दिग्विजयाने देशबांधव दिपून गेले. पुणे हे संस्कृत विद्येचे माहेरघर× विद्वानांचा या नगरीत स्वामीजींनी पन्नास व्याख्याने दिली. दि.२० जून १८७५ रोजी स्वामीजी पुण्यात आले. त्यानंतर सुमारे तीन महिने ते प्रसंगपरत्वे बोलत राहिले. बुधवार पेठेतील तांबडचा

जोगेश्वरीजवळच्या भिडे वाड्यात स्वामींनी सलग पंधरा व्याख्याने दिली. दि.५ सप्टेंबर १८७५ या दिवशी स्वामीजींच्या सन्मानार्थ एक भव्य शोभायात्रा काढण्यात आली. या शोभायात्रेत न्यायमूर्ती रानडे व महात्मा फुले अग्रभागी होते.

या शोभायात्रेत व्यत्यय आणण्याचा प्रयत्न काही कर्मठांकडून घडेल, अशी भीती वाटत होती. म्हणून न्यायमूर्ती रानडे महात्मा फुल्यांना आदल्या दिवशी भेटले व त्यांना मिरवणुकीत सहभागी होण्याची विनंती केली. फुल्यांच्या तालमीत तयार झालेली तगडी आणि धट्टीकट्टी मुले पाहून सनातनी थिजले. त्यांनी स्वामीजींची विटंबना करण्यासाठी एका गाढवाला ÷गर्दभानंद' हे नाव देऊन एक समांतर मिरवणूक काढली. पण गाढव शहाणे ठरले. एकूण प्रकार पाहून ते बुजले आणि आपल्या चाहत्यांना योग्य तो प्रसाद देऊन ते चालते झाले. आपली जागा प्रसंगी माणसे घेऊ शकतील, असा विश्वास त्या मुक्या जीवाला वाटला असावा.

महाराष्ट्राप्रमाणे पंजाब आणि राजपुतांना या प्रांतातही स्वामींनी शास्त्रार्थाच्या सभा घेतल्या व ज्ञानयज्ञ केले. अनेक रजपूत राजे त्यांचे भक्त झाले. त्यांचा कायापालट झाला. हळहळू हे लक्ष्मीपुत्र आसक्तीकडून विरक्तीकडे व विरक्तीकडून देशभक्तीकडे वळले. हे सामाजिक स्थित्यंतर अनेकांना खपले नाही. जोधपूरचे नरेश जसवंतसिंह हे एक मदिरासक्त व स्वैराचारी राजे होते. त्यांच्या गैरवर्तनाला आवर घालावा म्हणून त्यांचे दोघे बंधू प्रतापसिंह आणि तेजसिंह यांनी स्वामीजींना प्रार्थना केली की जोधपूर राज्यास त्यांचा चरणस्पर्श घडावा. वातावरण निवळेल, राजा सुधारेल व प्रजा सुखावेल. त्यांचा अंदाज खरा ठरण्याची वेळ आली. एवढ्यात एका महिलेचा मायावीपणा मार्गात आला. जसवंतसिंहाची रखेली नन्ही भगत आणि तिचा कावेबाज गुरु गणेशपुरी हे दोघे महाराजांच्या स्वभावातील बदलामुळे कावरेबावरे झाले. त्यांची भ्रष्टता जगाच्या नजरेस पडेल, अशी भीती त्यांना वाटली. त्या दोघांनी डाव रचला. स्वामीजींचा आचारी बलदेव(जगन्नाथ) यास वश करून घेतले, त्याला मोठे इनाम देऊ केले आणि मोठ्या कुशलतेने स्वामीजींवर विषप्रयोग केला. स्वामीजी या प्रयोगास बळी पडले.

यापूर्वी अनेक वेळा स्वामींना विषबाधा घडली होती. कांही योगप्रक्रियांनी शरीर शुद्ध करून त्यांनी मृत्यूला सीमेवरून परतवले होते. यावेळी मात्र स्वामींनी तसे कांही केले नाही.(कारण विषाची भयंकरता तीव्र स्वरूपाची होते.)

दि.३० ऑक्टोबर १८८३ मंगळवारचा दिवस× दिवाळीची अमावस्या×

स्वामीजींनी गुरुदत्त नावाच्या आपल्या शिष्याला जवळ बोलावले. त्याच्या मस्तकावर हात ठेवून स्वामी म्हणाले, ÷आनंदात रहा.' नंतर काही वेळ त्यांनी गायत्रीचा जप केला आणि ÷विश्वानि देव' हा आपला आवडता वेदमंत्र म्हटला. मग थोडा वेळ स्वामींनी ध्यान केले. ध्यान संपले. त्यांनी आजूबाजूला पाहिले आणि नंतर स्वामीजी पहुडले. (**÷हे परमेश्वरा× तुझी ही इच्छा पूर्ण होवो' असे ते शेवटी म्हणाले.)** त्यांच्या चिरविश्रांतीचा तो क्षण ठरला.

स्वामीजी गेले. पण मागे विचारवंतांची, कार्यकर्त्यांची, समाजसेवकांची व राष्ट्रनिष्ठांची मांदियाळी ठेवून गेले. ÷**आर्यसमाज**' या संकल्पनेचा पुरस्कार करणारे असंख्य आबालवृद्ध स्वामीजींचे पाईक झाले. लाला लाजपतराय, लाला मुन्शीराम, लालबहादुर शास्त्री, लाला हंसराज, पंडित श्यामजी कृष्णवर्मा या सर्वांनी स्फूर्ती घेतली ती महर्षी दयानंदांपासूनच× कोल्हापूरचे शाहू छत्रपती हे स्वामीजीचे भक्त व आर्यसमाजाचे अभिमानी होते.

जनसामान्यांना स्फूर्ती देण्याचे काम स्वामीजींनी देहत्यागानंतरही केले. रझाकारांनी मराठवाड्यातील गावेच्या गावे उद्ध्वस्त करण्याचा प्रयत्न केला, तेंव्हा त्यांना पायबंद घालण्याचा पराक्रम केला, तो दयानंदांच्या दूतांनी× आजदेखील एखाद्या आडबाजूच्या खेड्यात हरिजनाचे मूल मांडीवर घेऊन समोर बसलेल्या सुकन्येला गायत्री मंत्र शिकवणारा एखादा गरीब नागरिक आपणांस दिसेल. दयानंद हाच त्याचा देव असेल.

दयानंदांच्या व्यक्तिमत्त्वाचे मूल्यमापन करतांना थोर इतिहाससंशोधक जदुनाथ सरकार म्हणाले होते की, ÷÷भारताच्या बौद्धिक आणि नैतिक विकासात दयानंदांचा वाटा मोठा होता.'' श्री अरविंद दयानंदांना ÷मंत्रदाता ऋषी' म्हणत. लोकमान्यांनी दयानंदांचा उल्लेख ÷स्वराज्याचे पहिले संदेशवाहक व मानवतेचे महान उपासक' या शब्दांत केला आहे. स्वातंत्र्यवीर सावरकरांनी अशी ग्वाही दिली की, ÷सत्यार्थप्रकाश' हा अमर ग्रंथ आहे. डॉक्टर राधाकृष्णन् यांनी एका भाषणात हे स्पष्ट केले होते की, भारताच्या राज्यघटनेत सामाजिक क्षेत्रातील अनेक व्यवस्था दयानंदांच्या उपदेशातून स्फुरलेल्या आहेत.

निकटतम व्यक्तींच्या निधनाने अंतर्मुख झालेले दयानंद आजन्म अमरत्वाचा शोध घेत राहिले. जीवनाला लागलेले मरणाचे ग्रहण सुटावे म्हणून त्यांनी घोर योगसाधन केले. अखंड तपश्चरण केले. आपल्या साधनेने ते अजरामर झाले. कृतार्थ जीवनाच्या शेवटी येणारे मरण हे अमरपणाचेच एक रूप असते, हे जगाला कळले ते महर्षींमुळेच ×

* * *

शोक वार्ता — पुरोहित पं.करकेलेअप्पा यांचे निधन

औराद शहाजानी, देवणी व निलंगा परिसरातील आर्य समाजाचे वयोवृद्ध कर्मठ कार्यकर्ते, आर्य पुरोहित व भजनीक पं.वैजनाथअप्पा करकेले यांचे २७ ऑगस्ट २०१८ रोजी देवणी येथे राहत्या घरी अल्पशा आजाराने दु:खद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ८० वर्षे वयाचे होते. गेल्या कांही महिन्यांपासून आजारी असलेल्या अप्पांवर उदगीर येथील खाजगी रुग्णालयात उपचार करण्यात आले. त्यांच्या पश्चात् चार मुले, सुना, कन्या, जावई, नातू, पणतू असा परिवार आहे.

श्री करकेलेअप्पा गेल्या ३० वर्षांपासून आर्य समाजाच्या सान्निध्यात होते. औराद शहाजानी येथील डाकगृहात ÷पोस्ट मास्तर' म्हणून सेवा बजावलेल्या अप्पांनी सेवानिवृत्ती नंतर आर्य समाजाच्या प्रचार कार्याला वाहून घेतले होते. विविध यज्ञात ÷पुरोहित' म्हणूनही त्यांनी काम केले. विविध कार्यक्रमात, संस्कार शिबिरांत व उत्सव प्रसंगी ते आपल्या खड्या पहाडी आवाजात हिंदी-मराठी भजने सादर करीत. या भजनांमुळे श्रोत्यांमध्ये नवा जोश संचारत असे. अलीकडील काळात औराद शहाजानी आर्य समाजाचे पूर्णवेळ पुरोहित व कार्यकर्ते म्हणून त्यांनी सेवा दिली होती. येथील ÷श्रावणमास पारिवारिक सत्संग' कार्यक्रमात ते खूपच सक्रीय होते. त्यांच्या निधनामुळे जुन्या पीढीतील एक अनुभवी कार्यकर्ता, उत्तम आर्य भजनीक व पुरोति गेल्याची उणीव आर्यजनांना भासत राहील.

अशोक कातपुरे यांना बंधुशोक

सुगाव (ता.चाकुर) येथील आर्य समाजाचे मंत्री व आर्य भजनीक श्री अशोकराव कातपुरे यांचे लहान बंधू श्री संजय बाबुराव कातपुरे यांचे बुधवार दि.१२ सप्टेंबर रोजी पहाटे ५ वा. सुमारास अल्पशा आजाराने आकस्मिक दु:खद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ४८ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात् पत्नी अनिता, दोन मुले,भाऊ व भगिनी असा परिवार आहे.

स्व.श्री संजय कातपुरे यांना दोन महिन्यांपूर्वी कावीळ हा आजार झाला होता. लातूरच्या खासगी रुग्णालयात उपचार सुरु असतांनाच त्यांची प्राणज्योत मालवली. त्यांच्या या आकस्मिक निधनामुळे कातपुरे कुटुंबावर दु:खाचा डोंगर कोसळला व परिसरात शोककळा पसरली आहे.

दिवंगत कातपुरे यांच्या पार्थिवावर दुपारी ३.३० वा. अंत्यत शोकाकुल वातावरणात वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. शिवणखेड आर्य समाजाचे मंत्री बभ्रुवाहन शिंदे, प्रधान विजयपाल कुल्ले, उपप्रधान व्यंकटराव कुल्ले, कोषाध्यक्ष भागवतराव आरदवाड, तुकाराम आलापुरे, विद्यासागर आरदवाड यांनी हा अंत्यविधी पार पाडला.तिसऱ्या दिवशी मोगरगा आर्य समाजाचे मंत्री पं.शिवाजीराव निकम यांच्या पौरोहित्याखाली शांतीयज्ञ संपन्न झाला.

तळमळीचा आर्य कार्यकर्त्ता हरपला

शहापुरचे श्री पुल्लागोर यांचे अपघाती निधन

शहापुर(ता.देगलुर जि.नांदेड) येथील धडाडीचे वरिष्ठ आर्य कार्यकर्ते श्री हनमनलू लच्छमन्ना पुल्लागोर यांचे दि.२९ ऑक्टोबर रोजी सायं.६.३० वा. च्या सुमारास वाहन अपघातात आकस्मिक दु:खद निधन झाले. ते ६७ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात् दोन मुले सोमदत्त (पो.हे.कॉ.) व सुधाकर (शेतकरी) आणि कन्या सौ.रेखा सुशील नलवाड (लातूर), सुना, नातवंडे असा परिवार आहे.

श्री पुल्लागेर यांच्या सारख्या तळमळीच्या आर्य कार्यकर्त्याच्या निधनामुळे शहापुर आर्य समाजाचा आधारस्तंभ व परिसरातील एक प्रामाणिक प्रतिष्ठित कार्यकर्त्ता नाहीसा झाल्याने मोठी पोकळी निर्माण झाली आहे. श्री पुल्लागोर हे शहापुरचे तपस्वी, कर्मठ, साधुवृत्तीचे आर्यसंत स्व.लक्ष्मणराव बासरे आर्य(पं.गणेशदेवजींचे वडील) यांचे पक्के शिष्य तर म.दयानंदांचे एकनिष्ठ अनुयायी होते. विविध ठिकाणच्या सभा संमेलनात व उत्सवात ते आंनदाने सहभागी होत असत. गावातील आर्य समाजाचे कार्यक्रम व संस्कार शिबिरे घेण्यात त्यांचा पुढाकार होता. दीड वर्षापूर्वी मानवता संस्कार शिबिर आयोजित करण्यात त्यांचे प्रयत्न फार मोलाचे ठरले. तसेच स्थानिक ग्रामपंचायतचे माजी सदस्य व शेतकरी संघटनेचे ही ते कार्यकर्ते होते.

गेल्याच वर्षी त्यांच्या पत्नीचे आकस्मिक निधन झाले होते. त्या दु:खातून ते आणखी सावरलेही नव्हते. तर हा दुर्दैवी प्रसंग घडला. देगलूरहुन कार्य आटोपून दुचाकीने शहापुरकडे येत असतांनाच समोरून येणाऱ्या छोट्या हत्ती टॅम्पोस धडक लागून ते जबर जखमी झाले. रुग्णालयाकडे नेत असतांना वाटतेच त्यांची प्राणज्योत मालवली. त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी अत्यंत शोकाकुल वातावरणात वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

धर्माबादचे पुरोहित पं.श्री अनिल आर्य, सभेचे अंतरंग सदस्य श्री सुरेश चिंतावर व इतरांनी हा अंत्यविधी संपन्न केला.

वरील दिवंगत आत्म्यांना महाराष्ट्र आ.प्र. सभा व सर्व आर्य समाजांतर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली× कुटुंबियांच्या दु:खात आर्यजनता सहभागी आहे.

प्रांतीय सभेतर्फे राज्यस्तरीय दोन वक्तृत्त्व स्पर्धा

पू.पिताश्री स्व.विठ्ठलराव बिराजदार (तांभाळकर) स्मृती

१) राज्यस्तरीय विद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा २०१८

विषय:-म.दयानंदांचे ईश्वरविषयक विचार(सत्यार्थ प्रकाश-सातवा सम्मुलास)

रविवार दि.०९.१२.२०१८ / वेळ सकाळी ११ वा.

स्थळ :- आर्य समाज, हिंगोली

१) स्पर्धेत केवळ माध्य. विद्यालयाच्या (इ.८,९,१०वी) विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.

२) स्पर्धेसाठी प्रत्येक विद्यालय किंवा आर्य समाजातर्फे ३-३ स्पर्धक पाठवावेत.

३) प्रत्येक स्पर्धकास भाषणासाठी (मराठी/हिंदी) ८(६+२) मिनिटे वेळ दिला जाईल.

४) प्रवेश शुल्क रु.५०/- भरून दि. २०.११.२०१६ पर्यंत स्पर्धेची नोंदणी करावी.

५) पारितोषिके १) रु.१५००, २) रु.११००, ३) रु.७७५, रु.१०० चे वैदिक साहित्य

सौ.कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले(आनंदमुनिजी) यांच्या गौरवार्थ

२) राज्यस्तरीय महाविद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा २०१८

विषय : +जगाच्या निर्मितीविषयीचे दयानंदांचे विचार'

(सत्यार्थ प्रकाश-८वा सम्मुलास)

शनिवार दि.२२.१२.२०१८ / वेळ स.११ वा.

स्थळ :- मा.दीनानाथ मंगेशकर महाविद्यालय, औराद शहा.

१) स्पर्धेत ११वी ते पदवी वर्गातील महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.

२) प्रत्येक महाविद्यालय किंवा आर्य समाज जास्तीत जास्त ३ स्पर्धक पाठवू शकतील.

३) प्रत्येक स्पर्धकास भाषणासाठी (मराठी/हिंदी) ८(६+२) मिनिटे वेळ दिला जाईल.

४) प्रवेश शुल्क रु.५०/- भरून दि. १०.१२.२०१६ पर्यंत स्पर्धेची नोंदणी करावी.

५) पारितोषिके १) रु.२०००, २) रु.१५००, ३) रु.१०००, रु.१०० चे वैदिक साहित्य

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की झलकियाँ

केंद्रीय सडक परियोजना मंत्री श्री नितीनजी गडकरी आर्यों को सम्बोधित करते हुए।

सामूहिक एकता महायज्ञ में ८००० याज्ञिकों को मार्गदर्शन करते हुए आचार्य बालकृष्णजी। साथ में हैं योगगुरु स्वामी रामदेवजी एवं अन्य।

सम्मेलन के मुख्य मंच पर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री योगमुनिजी की उपस्थिति।

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/24/2018-2020

सेवा में,
श्री.

प्रेषक –
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ,
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय-आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

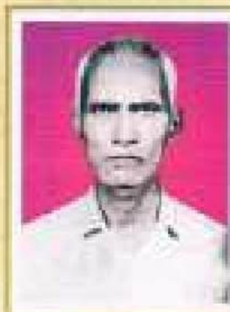

।। ओ३म् ।।

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के स्वाधीनता सैनिक,
हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सत्याग्रही,
लोकमान्य शिक्षण संस्था, पानचिंचोली
(ता.निलंगा जि.लातुर) के संस्थापक, समाजसेवी व्यक्तित्त्व
स्व.श्री.वासुदेवराव हनुमंतराव होलीकर
की पावन स्मृतिमें उनकी सहधर्मचारिणी
श्रीमती रुक्मिणीदेवी वासुदेवराव होलीकर
की ओर से वैदिक गर्जना मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट

जीवेम् शरदः शतम् !